प्रदूषण होता है। तालाबों व झीलों में रेशेदार फसलों की सड़ान के कारण भी जल प्रदूषित हो जाता है।

जल प्रदूषण के दुष्प्रभाव

जल चक्र द्वारा प्रकृति के समस्त प्राणी एवं पौधे सम्बद्ध होने के कारण प्रदूषण का दुष्प्रभाव बड़ा व्यापक होता है। जल में उपस्थित प्रदूषकों की मात्रा के आधार पर इसका प्रभाव स्थानीय, प्रादेशिक या विश्वव्यापी हो सकता है। जल प्रदूषण से होने वाले प्रमुख दुष्प्रभाव अग्र हैं :

(1) **मानव पर**—प्रदूषित जल के सेवन से अनेक रोग हो जाते हैं। जल में उपस्थित हानिकारक रसायन मानव के विभिन्न अंगों को हानि पहुंचाते हैं। उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट जल में अनेक विषैले पदार्थ होते हैं, जैसे फ्लोराइड्स, फीनोल्स, सायनाइड, अम्ल, क्षार, पारा, सीसा आदि। पेयजल के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश करने पर ये पदार्थ अनेक विकार उत्पन्न करते हैं।

पारा एक गम्भीर प्रदूषक एवं संचयी जहर है। यह शरीर से उत्सर्जित नहीं होता है, अतः इसके घातक प्रभाव होते हैं। यह तन्त्रिका तन्त्र को अत्यधिक प्रभावित करता है।

सीसा भी एक संचयी जहर है। सीसा युक्त जल के सेवन से मांसपेशियों, पाचन संस्थान व केन्द्रीय नाड़ी संस्थान से सम्बन्धित रोग हो जाते हैं। जल में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने पर फ्लोरोसिस रोग हो जाता है, जिसमें दांतों में धब्बे पड़ जाना, हड्डियों व जोड़ों में दर्द होना, पैर घुटनों से बाहर की तरफ मुड़ना आदि दुष्प्रभाव देखने में आते हैं। कृषि में रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से नाइट्रेट्स